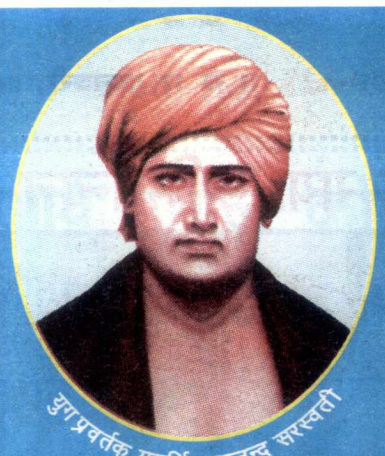

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 22 कुल पृष्ठ-8 11 से 17 जनवरी, 2018 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 मा. कृ.-10

आर्य समाज के संन्यासियों, वानप्रस्थियों एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

वैदिक विरक्त मण्डल का त्रिदिवसीय सम्मेलन

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में सफलता के साथ सम्पन्न

स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी अग्निवेश, स्वामी सुमेधानन्द (सांसद), स्वामी आर्यवेश तथा स्वामी ओमवेश सहित प्रमुख आर्य संन्यासियों एवं विरक्तों ने सम्मेलन में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई

समस्त विरक्तों का स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ की ओर से किया गया अभिनन्दन

आर्य समाज के संन्यासियों, वानप्रस्थियों एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन वैदिक विरक्त मण्डल का त्रिदिवसीय सम्मेलन 5 से 7 जनवरी, 2018 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा में भव्यता के साथ आयोजित हुआ। सम्मेलन में आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी योगनिष्ठ स्वामी दिव्यानन्द जी प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल, अनेक गुरुकुलों के संचालक वैदिक विरक्त मण्डल के कोषाध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, सीकर राजस्थान से सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी, उत्तर प्रदेश के पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी चन्द्रवेश जी, ओजस्वी वक्ता युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, वैदिक विरक्त मण्डल के संगठन मंत्री स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, स्वामी सवितानन्द जी रांची आदि के अतिरिक्त समस्त प्रतिष्ठित आर्य संन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। वैदिक विरक्त मण्डल के महामंत्री तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अत्यन्त कुशलता के साथ कार्यक्रम का संयोजन किया। सम्मेलन की सम्पूर्ण व्यवस्था का दायित्व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान आचार्य दीक्षेन्द्र जी एवं उनके समस्त सहयोगी साथियों तथा बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा महामंत्री बहन प्रवेश आर्या एवं उनकी समस्त सहयोगी कार्यकर्ता बहनों ने अत्यन्त कुशलता के साथ निभाया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ 5 जनवरी, 2018 को सायंकाल 7 से 10 बजे तक आयोजित परिचय सम्मेलन से हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वेदाचार्य एवं व्याकरणाचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी ने की। 6 जनवरी को प्रातः यज्ञ का सम्पादन स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में हुआ तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन कराया गया। सम्मेलन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता विरक्त मण्डल के कोषाध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने की तथा इसमें मुख्य अतिथि राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष प्रसिद्ध दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी रहे। प्रातः ध्वजारोहण भी ठा. विक्रम सिंह जी के कर-कमलों से कराया गया। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी चन्द्रवेश जी आदि ने उनका सहयोग किया। परिषद् के कुशल व्यायाम शिक्षक ब्र. सोनू आर्य ने ध्वजारोहण की प्रक्रिया का संयोजन किया।

ध्वजारोहण के उपरान्त ठा. विक्रम सिंह जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में आर्य समाज एवं ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के प्रथम सत्र को युवा संन्यासी स्वामी देवेश्वरानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य सत्यप्रकाश आर्य जी, मुख्य अतिथि ठा. विक्रम सिंह जी तथा स्वामी अग्निवेश जी ने सम्बोधित किया। भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के प्रधान श्री सहदेव बेधड़क ने अपने भजनों के माध्यम से कार्यक्रम में नया जोश तथा सजीवता प्रदान की। इसी तरह युवा भजनोपदेशक दुष्यन्त कुमार तथा ब्रह्मदेव आर्य ने अपनी शानदार प्रस्तुति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि ठा. विक्रम सिंह जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी के नाम से स्थापित इस विद्यापीठ में आते ही पुरानी स्मृतियाँ ताजा हो जाती हैं। क्योंकि स्वामी इन्द्रवेश जी से मेरा अत्यन्त आत्मीय सम्बन्ध एवं मित्रता रही है। वे आर्य जगत् के महान संन्यासी थे और अपने साथियों से सदैव उदारता एवं सम्मानजनक व्यवहार उनकी विशेषता थी। उन्होंने स्वामी अग्निवेश जी को भी आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी बताते हुए कहा कि उनसे देश को बहुत आशाएँ हैं। ठा. विक्रम सिंह जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए समस्त विरक्त महानुभावों का आह्वान किया कि अब हमें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके आर्य समाज और महर्षि दयानन्द को आगे लाना होगा। समस्त राजनैतिक पार्टियाँ आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी को षड्यन्त्र के तहत पीछे धकेल रही है। यह हमारे लिए एक चुनौती है। ठा. विक्रम सिंह जी ने समस्त विरक्त महानुभावों को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर ठा. विक्रम सिंह जी का श्री दयानन्द शास्त्री वैदिक विद्वान टिटौली द्वारा शॉल एवं राजवीर वशिष्ठ टिटौली द्वारा गायत्री मन्त्र का पट्का पहनाकर अभिनन्दन किया गया।

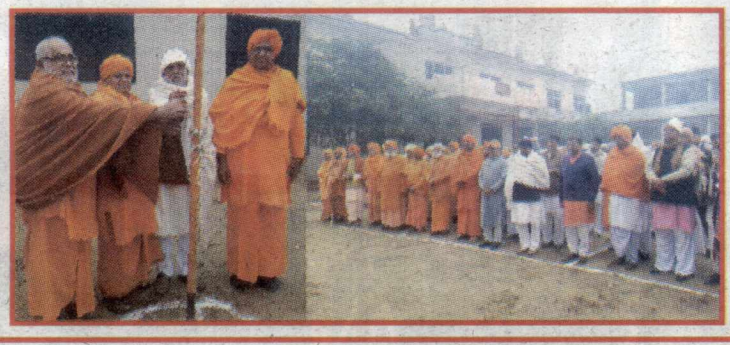

विश्व विख्यात संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बहुत सारे लोग मेरे विचारों से सहमत नहीं होते और उन्हें इसकी शिकायत रहती है। दो दिन मैं यहाँ आप सबके साथ रहूँगा यदि किसी को भी कोई शंका मेरे जीवन, मेरे विचारों अथवा मेरे वक्तव्यों से सम्बन्धित हो तो मैं सहज उनका निराकरण करने की कोशिश करूँगा और यदि मेरी गलती होगी तो मैं उसमें सुधार करने का प्रयत्न करूँगा। मेरा प्रयत्न रहता है कि मैं महर्षि दयानन्द और वेद के विरुद्ध किये गये किसी भी प्रयास का भरपूर प्रतिरोध करूँ और अपने आचरण एवं अपने विचारों से आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों तथा उद्देश्यों को सर्वत्र फैलाने में प्रयासरत रहूँ। स्वामी अग्निवेश जी ने सामयिक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज का राजनीतिक मंच बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी ने आर्यसभा बनाकर यह ऐतिहासिक कार्य किया था, किन्तु किन्हीं परिस्थितियों के कारण वो लम्बे समय तक नहीं चल सका। इसमें हमारी भी भूल रही। किन्तु अब इस विषय पर गम्भीरता से विचार करके निर्णय लेने का समय आ चुका है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी प्रणवानन्द जी ने संन्यासियों एवं विरक्तों के लिए विशेष निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि हमारा जीवन पवित्रता, सात्विकता एवं सिद्धान्तनिष्ठ होना चाहिए। यदि हमारा आचरण एवं व्यवहार बिगड़ गया तो लोगों पर हमारा प्रभाव नहीं पड़ेगा। अतः हमें प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए।

द्वितीय सत्र में स्वामी चेतनानन्द जी-राजस्थान, स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी मुरादाबाद, स्वामी सच्चिदानन्द जी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

समस्त विरक्तों का स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ की ओर से किया गया अभिनन्दन

यमुनानगर, स्वामी शिवानन्द जी बहादुरगढ़, स्वामी अग्निवेश जी कानुपर, स्वामी आत्मानन्द जी मथुरा, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, स्वामी अमित्क्षानन्द जी, स्वामी महानन्द जी, स्वामी सवितानन्द जी, स्वामी निर्भयानन्द जी, स्वामी राजनाथ योगी जी, स्वामी सम्मानमुनि जी, श्री रामपाल शास्त्री दिल्ली आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री सहदेव बेधड़क एवं श्री दुष्यन्त कुमार के भजनों का कार्यक्रम भी चलता रहा।

रात्रि में श्री सहदेव बेधड़क, श्री दुष्यन्त कुमार, श्री महात्मा राममुनि आदि ने अपने भजनों द्वारा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

7 जनवरी, 2018 को प्रातः यज्ञ में स्वामी चन्द्रवेश जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ तत्पश्चात् समापन तथा अभिनन्दन समारोह स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि सीकर राजस्थान से लोकसभा के सदस्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी थे। उनके अतिरिक्त स्वामी अग्निवेश जी, उत्तर प्रदेश के पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, वैदिक विरक्त मण्डल के प्रधान स्वामी दिव्यानन्द जी, वैदिक विरक्त मण्डल के कोषाध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, संगठन मंत्री स्वामी सोम्यानन्द जी, रिटायर्ड आई.पी.एस. डॉ. आनन्द कुमार जी, स्वामी सूर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा महामंत्री बहन प्रवेश आर्या तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क ने भी अपने विचार प्रकट किये।

इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में कहा कि अगले 10 वर्ष आर्य समाज के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन 10 वर्षों में हम यदि परिश्रम करके आर्य समाज की शक्ति को संगठित कर सके तथा शक्ति प्रदर्शन कर सके तो सरकारों से हम अपनी बात मनवा सकते हैं। स्वामी जी ने बताया कि सन् 2024 महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म की 200वीं जयन्ती का वर्ष होगा। सन् 2025 आर्य समाज की स्थापना का 150वाँ वर्ष होगा। सन् 2026 स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान का 100वाँ वर्ष होगा। सन् 2027 अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान का 100वाँ वर्ष होगा। इस प्रकार वर्ष 2024 से 2027 तक हम आर्य समाज के ऐतिहासिक कार्यक्रम प्रस्तुत करके आर्य समाज में एक नया जीवन, नई स्फूर्ति एवं नई शक्ति का संचार कर सकते हैं। हमें निश्चय करना चाहिए कि सन् 2024 में 200 संन्यासी, 200 वानप्रस्थी तथा 200 नैष्ठिक ब्रह्मचारी दीक्षित किये जायें। आर्यवीर दल आर्य युवक परिषद् आदि समस्त युवा संगठनों के माध्यम से लाखों युवकों को आर्य समाज से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित किया जाये। आर्य समाज के समस्त गुरुकुलों एवं शिक्षण संस्थाओं को आदर्श शिक्षण संस्थाओं के रूप में स्थापित करने की बृहद योजना बननी चाहिए। स्वामी सुमेधानन्द जी ने आर्य समाज के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज की विचारधारा से उनका जीवन ओत–प्रोत है। वे आज जो कुछ भी हैं वह आर्य समाज की बदौलत हैं। उन्हें बचपन से ही आर्य समाज के महान संन्यासियों की प्रेरणा एवं सान्निध्य प्राप्त हुआ है। स्वामी जी ने स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी इन्द्रवेश जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें इन महापुरुषों के जीवन से विशेष प्रेरणा मिली है। उन्होंने विरक्त मण्डल के सफल आयोजन के लिए स्वामी आर्यवेश जी को बधाई देते हुए उन्हें

आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर स्वामी ओमवेश जी ने आर्य समाज के संन्यासियों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संन्यासी आर्य समाज की रीढ़ हैं। संन्यासियों के बिना आर्य समाज के कार्यक्रम शोभाविहीन रहते हैं। अतः हमें संन्यासियों की संख्या बढ़ाने पर जोर देना चाहिए। उन्होंने आर्य समाज के महान संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी का स्मरण करते हुए कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी ने मेरे जैसे अनेक संन्यासियों को प्रेरित करके आर्य समाज का कार्य करने के लिए तैयार किया था। स्वामी इन्द्रवेश जी युवाओं के प्रेरणास्रोत थे। स्वामी जी ने 29 मई, 2018 को

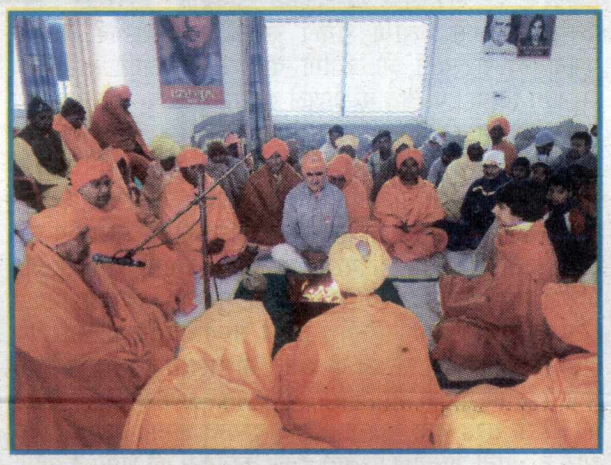

केवलानन्द आश्रम बिजनौर में अगला वैदिक विरक्त मण्डल सम्मेलन करने का निमंत्रण दिया जिसे विरक्त मण्डल ने अंकित कर लिया है।

डॉ. आनन्द कुमार जी ने कहा कि हमें अपने कार्यों पर गर्व करना चाहिए तथा निराशा को अपने जीवन से दूर भगा देना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज ही एकमात्र संस्था है जहाँ जन्मना जाति के बदले गुण, कर्म एवं योग्यता के आधार पर व्यक्ति को सम्मान मिलता है। हमारे गुरुकुलों में किसी की जाति नहीं पूछी जाती है। यहाँ अनेक उदाहरण हैं कि दलित परिवारों में पैदा हुए बच्चों को वेद, शास्त्र आदि का अध्ययन कराकर उन्हें

आचार्य एवं पण्डित के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। जातिवाद के विरुद्ध आर्य समाज से ज्यादा अन्य किसी भी संगठन ने इतना ठोस कार्य नहीं किया है।

स्वामी दिव्यानन्द जी ने अपना लिखित संदेश प्रस्तुत किया जिसे स्वामी आर्यवेश जी ने पढ़कर सुनाया। उन्होंने संन्यासियों को साधना, योगाभ्यास तथा स्वाध्याय करने पर बल दिया। विरक्त मण्डल के तत्वावधान में सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जनचेतना अभियान चलाने की भी उन्होंने प्रेरणा दी।

स्वामी प्रणवानन्द जी ने तीन दिन के सम्मेलन को अत्यन्त सार्थक, सफल एवं शानदार सम्मेलन बताते हुए बार–बार इस प्रकार के आयोजन करने का सुझाव दिया। श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री जी ने सुझाव दिया कि अपना राजनैतिक मंच भी बनना चाहिए तथा आर्य समाज का संगठन भी मजबूत बनना चाहिए। स्वामी सोम्यानन्द जी ने संन्यासी के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला। बहन पूनम आर्या ने समस्त विरक्त महानुभावों की प्रशस्ति करते हुए कहा कि आप सभी सौभाग्यशाली हैं कि आपने महर्षि दयानन्द की आश्रम व्यवस्था को प्रतिष्ठा प्रदान की है और संन्यास व वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर चलाया है।

कार्यक्रम के अन्त में सभी विरक्तों का स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली की ओर से मकरसंक्रान्ति के उपलक्ष्य में कम्बल, शॉल, च्यवनप्राश तथा दक्षिणा भेंटकर सम्मान किया गया। विरक्तों का सम्मान स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, श्री बिरजानन्द जी आदि के द्वारा कराया गया।

सम्मान समारोह के लिए श्री दीनदयाल गुप्ता कोलकाता एवं श्री मधुर प्रकाश दिल्ली द्वारा कम्बल, वैद्य सत्यप्रकाश आर्य द्वारा च्यवनप्राश, ठा. विक्रम सिंह जी द्वारा भोजन व्यवस्था एवं स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली द्वारा दक्षिणा की व्यवस्था के लिए सहयोग प्रदान किया गया। सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद बहन प्रवेश आर्या ने किया और कहा कि आगे भी हमें ऐसा अवसर अवश्य दें कि हम आर्य समाज के सभी विरक्त महानुभावों को अपनी विद्यापीठ में बुलाकर सम्मानित कर सकें। श्री महावीर सिंह ठेकेदार ग्राम टिटौली ने भी सभी विरक्त महानुभावों को दक्षिणा देकर सम्मानित किया।

इस त्रिदिवसीय आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था मिशन आर्यावत न्यूज बुलेटिन के अध्यक्ष तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान आचार्य दीक्षेन्द्र जी के संयोजन में परिषद् के कार्यकर्ताओं सर्वश्री सज्जन सिंह राठी, मा. प्रदीप कुमार, मा. अजीतपाल, मा. अशोक आर्य, मा. श्यामलाल आर्य, अमित गुप्ता, ईश्वरदत्त, डॉ. होशियार सिंह आर्य, जयपाल आर्य राजौन्द, दलवीर सिंह, जयवीर, रमेश आर्य हिसार, धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, ऋषिराज शास्त्री, ब्र. धर्मदेव, ब्र. अखिलेश, कु. शशि आर्या, कु. इन्दु आर्या, कु. रीमा आर्या, कु. सुमन आर्या, कु. किरण आर्या, कु. रिंकू आर्या आदि बहनों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इस अवसर पर परिषद् के प्रमुख साथियों की बैठक भी सम्पन्न हुई जिसमें भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई।

कार्यक्रम में आर्य समाज फरमाणा, आर्य समाज कासंडी, आर्य समाज मोखरा, आर्य समाज टिटौली एवं अन्य कई आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्य सम्मिलित हुए। कार्यक्रम बेहद उत्साहवर्धक एवं प्रेरणादायक हुआ और सभी विरक्त संकल्प के साथ विदा हुए।

आर्य समाज कोलकाता का 132वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं युवा वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव जी के प्रभावशाली प्रवचनों से आर्य जनता हुई उत्साहित

मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी का किया गया अभिनन्दन

आर्य समाज कोलकाता का 132वाँ वार्षिकोत्सव 23 से 31 दिसम्बर, 2017 तक हृषीकेश पार्क, आम्हर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता में समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ, विशाल शोभा यात्रा तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, आर्य संस्कृति सम्मेलन, महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य सोमदेव जी–अजमेर तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशिका सुश्री प्रियंका भारती के अतिरिक्त बंगाल के सुप्रसिद्ध विद्वानों में पं. आत्मानन्द शास्त्री, श्री देवनारायण त्रिपाठी, पं. वेद प्रकाश शास्त्री, श्री अपूर्वदेव शास्त्री, श्री योगेशराज उपाध्याय, श्रीमती अर्चना शास्त्री, आचार्य ब्रह्मदत्त जी, श्री मधुसूदन आर्य, श्री कृष्णदेव शास्त्री आदि ने वेदपाठ एवं बंगला भाषा के सत्रों को बड़ी कुशलता के साथ संचालित किया।

इस महासम्मेलन में झारखण्ड, उड़ीसा, बिहार, समस्त बंगाल, बंगलादेश तथा नेपाल से भारी संख्या में आर्यजन सम्मिलित हुए। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में श्री श्रीराम आर्य ने पूरे बंगाल में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को तीव्र गति प्रदान करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल तथा आर्य समाज कोलकाता की ओर से सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार कार्य को गति प्रदान करने का भी आह्वान किया।

इस 9 दिवसीय बृहद कार्यक्रम का कुशल संयोजन आर्य समाज के युवा मंत्री श्री दीपक आर्य ने किया। उनके साथ आर्य समाज के सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने में निष्ठा के साथ सहयोग प्रदान किया। समारोह में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव जी ने अत्यन्त गम्भीर विषयों पर अत्यन्त सरल भाषा में प्रभावशाली प्रवचनों को प्रस्तुत करके श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विभिन्न अवसरों पर अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में आर्य समाज की ऐतिहासिक उपलब्धियों, वर्णाश्रम व्यवस्था, सप्तक्रांति के मुद्दों तथा संगठन को सशक्त बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी आर्य समाज ने आम जनता की समस्याओं को अपने काम का मुख्य हिस्सा बनाया उसके लिए प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किये और बिना किसी पूर्वाग्रह के आम आदमी की समस्याओं के समाधान के लिए सर्वात्मना समर्पित होकर कार्य किया तब तक आर्य समाज एक तेजस्वी संगठन के रूप में जनता के समक्ष उभर कर सामने आया। स्वामी जी ने कहा कि आज फिर से समय आ गया है कि धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक कुरीतियों एवं अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध सशक्त आन्दोलन प्रारम्भ करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों का आंकलन करके आर्य समाज का भावी क्रांतिकारी कार्यक्रम तैयार करके जनसामान्य की समस्याओं के समाधान के लिए आगे आने की जरूरत है। स्वामी जी ने कहा कि जिन समस्याओं से भारत एवं विश्व की आम जनता त्रस्त एवं पीड़ित है उन ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलाकर अपनी पहचान बनानी होगी। स्वामी जी ने कहा कि आत्मोन्नति के लिए मानव को आध्यात्मिक तथा संयमयुक्त जीवन को अपनाना चाहिए जिससे व्यक्ति के मन, वाणी तथा कर्म तीनों पवित्र हो जाते हैं। जब मनुष्य अपने दोषों को देखता है अथवा आत्मनिरीक्षण करता है तब वह ऊपर उठता है तथा अच्छे गुणों को धारण करता है, संसार में सबको समान देखता है तथा राग–द्वेष से परे हो जाता है। स्वामी जी ने आज की सबसे घातक सामाजिक बुराई शराब तथा नशे की चर्चा करते हुए कहा कि नशे के खिलाफ जागृति अभियान चलाने की महती आवश्यकता है। क्योंकि यह बुराई हमारे युवाओं को पथभ्रष्ट करने के साथ–साथ परिवारों को भी उजाड़ रही है। उन्होंने आह्वान किया कि इन सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध एकजुटता से कार्य करें और आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने में अपना सहयोग प्रदान करें।

सम्पूर्ण समारोह को सफल बनाने में सर्वश्री श्रीराम आर्य, सुरेशचन्द जायसवाल–प्रधान एवं दीपक आर्य–मंत्री आर्य समाज कोलकाता, मदन सेठ, राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, मनीराम आर्य, सुरेश अग्रवाल, ध्रुवचन्द जायसवाल–कोषाध्यक्ष आदि का विशेष सहयोग रहा।

इस समारोह में विशेष रूप से पधारे मेघालय के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन करने वालों में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, कोलकाता आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जायसवाल, मंत्री श्री दीपक आर्य, आचार्य सोमदेव जी, श्री खुशहाल चन्द आर्य, श्री सुबीर पोद्दार, श्री मनीराम आर्य, श्री चान्दरत्न दम्मानी, प्रधान आर्य समाज बड़ा बाजार, श्री मधुसूदन शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने राज्यपाल जी का फूलमालाओं से अभिनन्दन किया। अपने उद्बोधन में महामहिम राज्यपाल जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज ने स्वतंत्रता आन्दोलन में विशेष भूमिका निभाई थी तथा सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध देश में एक अलख जगा दी थी। आज आर्य समाज का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ गया है। महामहिम ने कहा कि बढ़ते हुए धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड प्रचार शुरू किया जाना चाहिए। उन्होंने टेलीविजन के विभिन्न चैनलों पर आने वाले अश्लीलता एवं पाखण्डयुक्त प्रोग्रामों को देश की युवा पीढ़ी के लिए घातक बताया। श्री गंगा प्रसाद जी ने कहा कि वे चाहते हैं कि आर्य समाज का प्रचार अधिक से अधिक हो, हमारे गुरुकुल सुचारू रूप से चलें। यज्ञ के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि राज्यपाल की शपथ लेने से पहले उन्होंने वैदिक विद्वानों को बुलाकर यज्ञ किया क्योंकि यह आर्यों की वैदिक परम्परा है। उन्होंने कहा कि हम आर्य समाज के कार्य के लिए हर समय उपलब्ध हैं और सहयोग प्रदान करते रहेंगे। महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी ने पं. देव नारायण जी की श्रीकृष्ण चरित्र मानस पुस्तक का विमोचन भी किया। श्री खुशहालचन्द आर्य ने उन्हें अपने लेखों के संग्रह की ग्रन्थावली भेंट की।

प्रसिद्ध भजनोपदेशिका सुश्री प्रियंका भारती के भजनों का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा। उन्होंने अपने मधुर कंठ से लोगों को अत्यन्त प्रभावित किया। 23 दिसम्बर को निकाली गई शोभायात्रा का नगरवासियों ने स्थान–स्थान पर स्वागत किया तथा शोभायात्रा विशेष संदेश देने में सफल रही। 23 से 31 दिसम्बर, 2017 तक सामवेद पारायण यज्ञ प्रतिदिन प्रातः 8 से 10.30 बजे तक चलता रहा। इसके ब्रह्मा पद को आचार्य सोमदेव जी ने सुशोभित किया। यज्ञ के उपरान्त आचार्य जी व स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचन होते रहे। 31 दिसम्बर को पूर्णाहुति के अवसर पर सभी आर्यजनों को आर्य समाज के कार्य के लिए प्रतिदिन एक घण्टे का समय देने का संकल्प दिलवाया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

वैदिक विरक्त मण्डल सम्मेलन में वक्तागण उद्‌बोधन देते हुए

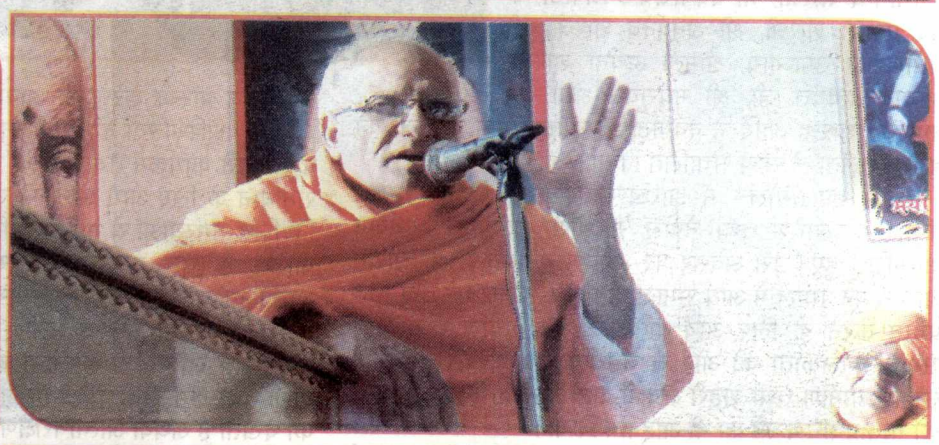

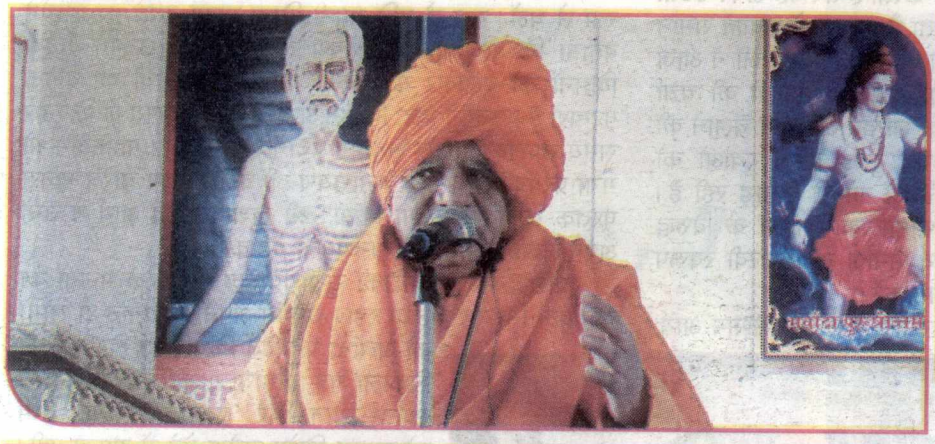

वैदिक विरक्त मण्डल सम्मेलन में सम्मान के मनोहारी दृश्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश के तत्वावधान में गायत्री महायज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

युवाओं को आध्यात्मिक उन्नति परक शिक्षा दिये बिना वास्तविक उन्नति सम्भव नहीं है

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

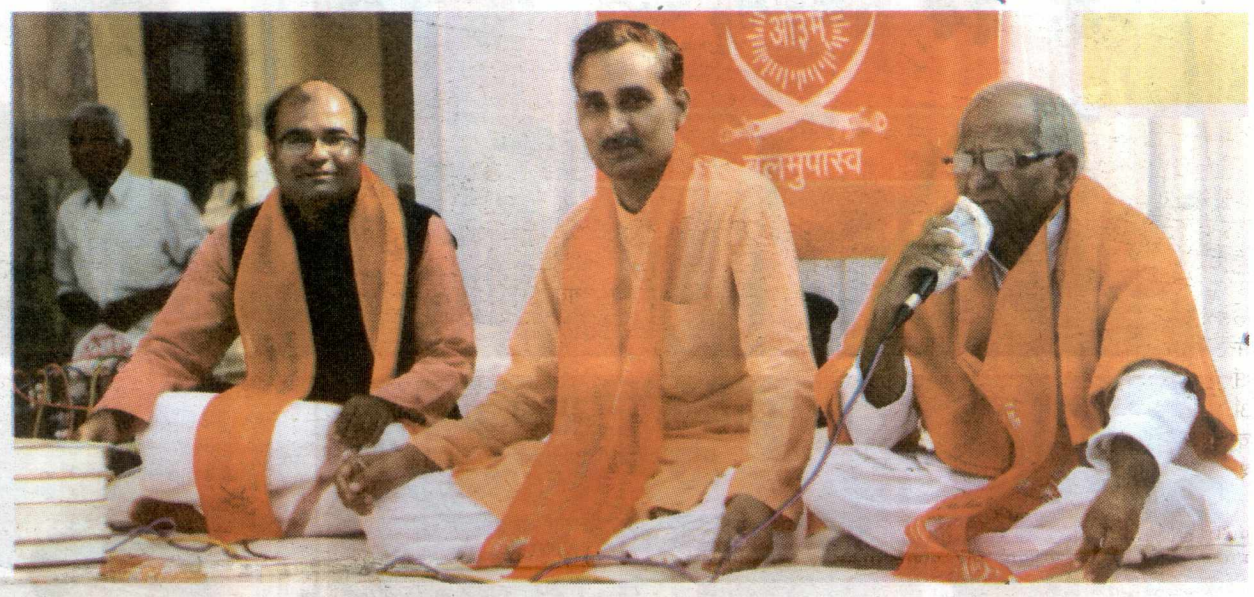

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश के तत्वावधान में 31 दिसम्बर, 2017 को गाँधी हाल के विशाल प्रांगण में गायत्री महायज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सम्पन्न हुए गायत्री महायज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती गायत्री मीणा दिल्ली रही। इस अवसर पर श्रीमती गायत्री मीणा ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव नहीं हुआ होता तो मेरे जैसी महिलाएँ ब्रह्मा के पद पर आसीन नहीं हो सकती थीं। महर्षि दयानन्द जी की अनुकम्पा से समस्त मातृशक्ति को वेद पढ़ने एवं यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त हुआ था। सब सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद है, वेद ही आदि ज्ञान है। ईश्वरीय वाणी वेद है। सब समस्याओं का समाधान वेद है। उपरोक्त विचार हरियाणा से पधारीं आचार्या लक्ष्मी भारती ने व्यक्त किये।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में कहा कि आर्य समाज हमेशा राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र रहा है। आज युवाओं को आधुनिक चकाचौंध में वैदिक आध्यात्मिक विचारधारा, वैज्ञानिक विचारधारा के साथ–साथ वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है इसका ज्ञान कराना होगा। जब तक युवाओं को आध्यात्मिक उन्नति परक शिक्षा का ज्ञान नहीं दिया जायेगा तब तक वास्तविक उन्नति सम्भव नहीं है। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता के आकर्षण में फंसे युवाओं के पतन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम युवाओं को सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयास करें। आर्य समाजों में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करें जिससे युवा वर्ग आकर्षित हो और आर्य समाज के कार्यों में कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए तैयार हों। आर्य समाजों में तथा अन्य संस्थाओं में युवाओं को चरित्र की शिक्षा, स्वास्थ्य की शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

ग्वालियर से पधारीं श्रीमती शांति विद्यालंकार ने भजनों के माध्यम से बताया कि हम कभी भी माता–पिता एवं ऋषियों का ऋण नहीं चुका सकते। उनके बताये हुए मार्ग तथा आदर्शों पर ही चलकर सच्चे सुख को प्राप्त किया जा सकता है। इस गायत्री महायज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन में मध्य प्रदेश के अलावा अनेकों प्रदेशों से ऋषि भक्तों ने पधारकर वैदिक विचारधारा एवं वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करने का संकल्प लिया। इस महायज्ञ तथा सम्मेलन की विशेषता यह रही कि इसका सम्पूर्ण कार्यभार तथा संचालन मातृशक्ति के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम संयोजक आचार्य भानु प्रताप (अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश) ने आगन्तुक सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष पं. योगेन्द्र महन्त ने कहा कि इन्दौर में अनेकों कार्यक्रम होते हैं किन्तु वैदिक विचारधारा से ओत–प्रोत यह कार्यक्रम अत्यन्त सुन्दर व अनुकरणीय है। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विश्व इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को

दिल्ली में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

आर्यनेता स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की स्मृति में व्याख्यान माला का भव्य आयोजन

गत् 30 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली के इण्डिया इण्टर नेशनल सेन्टर में आर्य समाज के महान नेता प्रखर वक्ता एवं सांसद पं. प्रकाशवीर शास्त्री की 94वीं जयन्ती के अवसर पर एक स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इस स्मृति व्याख्यानमाला का उद्देश्य आज की युवा पीढ़ी को शास्त्री जी के समाज और देशहित में किये गये कार्यों तथा विचारों से अवगत कराना तथा प्रेरणा देना था। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली के छात्रों ने दीप प्रज्ज्वलन के समय मधुरवाणी में वेद मंत्रों का उच्चारण कर सभा को मंगलमयी भाव से भर दिया।

सभा के उद्घाटन भाषण में प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास के अध्यक्ष श्री शरद त्यागी जी ने शास्त्री जी के आदर्शों तथा कार्यों का वर्णन किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के वरिष्ठ विद्वानों ने अपने संस्मरण साझा किये। वक्तागणों में डॉ. वेद प्रताप वैदिक वरिष्ठ पत्रकार, श्री सोमपाल शास्त्री पूर्व केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री, श्री सुभाष कश्यप जी पूर्व महासचिव लोकसभा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश आदि ने अपने विचार और संस्मरण रखे। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने शास्त्री जी की ओजस्वी वाणी और मोहित करने वाली भाषणशैली का बड़ी बखूबी से वर्णन किया। स्वामी जी ने यह भी बताया कि शास्त्री जी कैसे अपने शत्रुओं को अपने विनोदी एवं स्नेही स्वभाव से निस्तेज कर देते थे।

डॉ. सुभाष कश्यप ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि कैसे लोकसभा में उनका भाषण सुनने के लिए न सिर्फ सारे सांसद बल्कि लोकसभा सचिवालय का स्टाफ भी एकत्रित हो जाया करता था। डॉ. कश्यप ने पण्डित जी के साथ अपनी मित्रता की भी चर्चा की।

श्री सोमपाल शास्त्री जी ने अपने पारिवारिक सम्बन्धों का जिक्र करते हुए बताया कि शास्त्री जी मीठा ही बोलते थे चाहे वो बड़ों से अथवा

छोटों से बात कर रहे हों। उनके इस मीठे स्वभाव से सक्रिय राजनीति में होते हुए भी उनके कम ही आलोचक थे। सोमपाल शास्त्री जी ने पं. प्रकाशवीर जी शास्त्री के दूरदर्शी स्वभाव के बारे में भी जन–समूह को बताया।

डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने शास्त्री जी के हिन्दी रक्षा अभियान के बारे में अपने संस्मरण साझा किये। उन्होंने बताया कि कैसे उनकी पी.एच.डी. को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में स्वीकार नहीं किया जा रहा था तब शास्त्री जी और उनके साथियों ने संसद में इस मुद्दे को उठाकर सरकार का ध्यान इस पर आकर्षित किया था। डॉ. वैदिक ने आर्य समाज के आजादी में किये योगदान को भी याद किया और आर्य समाज को पुनः देश और समाजहित में अपनी शक्तियों को संगठित कर कार्यरत होने का आह्वान किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के कारण स्वयं न आ सके परन्तु उन्होंने एक वीडियो मैसेज द्वारा सभा को सम्बोधित किया और अपने संस्मरण साझा करते हुए बताया कि कैसे शास्त्री जी के कश्मीर पर विचार सुनने के लिए स्वयं पं. नेहरू ने भी अपना संसद में समय प्रकाशवीर जी को ही दे दिया था। स्वामी आर्यवेश जी ने पं. प्रकाशवीर जी शास्त्री की आर्य समाज और गुरुकुल की गोदी से निकलने पर गर्व व्यक्त किया और आह्वान किया कि ऐसे और भी प्रकाश पुंज आर्य समाज की गोदी से निकलने चाहिए जो देश और समाज को गौरवान्वित करें।

इस अवसर पर डॉ. सत्यपाल सिंह केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री उपस्थित न रह सके, पर उन्होंने अपना संदेश भिजवाया जिसमें उन्होंने बताया कि वह स्वयं कैसे शास्त्री जी के लेखों और भाषणों से प्रभावित हुए थे।

पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की जीवन यात्रा पर बनाई गई एक छोटी फिल्म भी उपस्थित जनसमूह को दिखाई गई। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के शास्त्री जी के बारे में व्यक्त विचारों को भी लोगों को एक वीडियो मैसेज के द्वारा दिखाया गया। कार्यक्रम का समापन गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली के छात्रों ने शांति पाठ से किया।

इस अवसर पर अनेकों अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे जिनमें सर्वश्री स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री आनन्द चौहान (एमेटि समूह), डॉ. अनिल त्यागी उपकुलपति इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. संजय त्यागी निदेशक जी.वी. पंत अस्पताल, नई दिल्ली, त्यागी समाज नई दिल्ली और त्यागी समाज गाजियाबाद के सदस्यगण।

आर्य समाज के भावी कार्यक्रम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन
रामलीला मैदान, अशोक विहार, फेस–2, दिल्ली–52 में होगा।
दिनांक 26 से 28 जनवरी, 2018

स्व. स्वामी शक्तिवेश जी की स्मृति में शहीद सम्मेलन का आयोजन
झज्जर, हरियाणा में
दिनांक 31 जनवरी, 2018

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन
आर्य समाज जवाहरनगर (कैम्प), पलवल हरियाणा में होगा।
4 फरवरी, 2018

धार्मिक पाखण्ड, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध
सोनीपत से सिरसा तक जन चेतना यात्रा का आयोजन।
5 से 11 फरवरी, 2018 तक।

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
स्थान–स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक, हरियाणा में।
27 फरवरी, 2018 से 11 मार्च, 2018 तक।

फरीदाबाद से भिवानी तक की जनचेतना यात्रा।
1 से 5 अप्रैल, 2018 तक।

वैदिक विरक्त मण्डल सम्मेलन का आयोजन
केवलानन्द निगम आश्रम, गंज दारानगर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश।
29 मई, 2018

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन
भारत की राजधानी दिल्ली के ताल कटोरा स्टेडियम में
6 से 8 जुलाई, 2018 तक।

भारत स्वाभिमान के प्रान्तीय प्रभारी श्री ईश कुमार आर्य की

पूज्या माता श्रीमती राजरानी आर्या का निधन

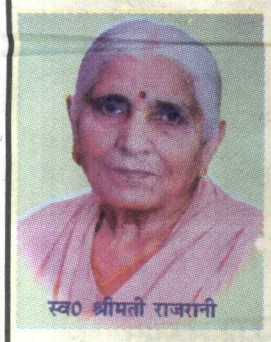
स्व0 श्रीमती राजरानी

योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के भारत स्वाभिमान प्रकल्प के प्रान्तीय प्रभारी श्री ईश कुमार आर्य की पूज्या माता श्रीमती राजरानी आर्या का गत दिनों 75 वर्ष की आयु में हिसार शहर के पटेल नगर कालोनी में स्थित उनके निवास पर निधन हो गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा पटेल नगर पार्क में आयोजित हुई जिसमें आर्य समाज के अनेक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के सैकड़ों कार्यकर्ता एवं जिलाध्यक्ष सम्मिलित हुए। श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य जी, गुरुकुल आर्यनगर के संरक्षक आचार्य रामस्वरूप जी, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के श्री राकेश जी, हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री प्रो. सम्पत सिंह जी, आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री सत्यपाल आर्य आदि गणमान्य महानुभावों ने स्वर्गीया माता राजरानी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वर्गीया माता जी एक धर्म पारायणा, कर्त्तव्यनिष्ठ, सहृदय, सेवाभावी एवं स्वाध्यायशील माता थीं। उनका जीवन अत्यन्त सरल एवं सात्विकता से ओत–प्रोत था। अतिथि सत्कार एवं दान करने में वे सर्वदा आगे रहती थीं। ऐसी आदर्श माता के निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। श्रद्धांजलि सभा में योग गुरु स्वामी रामदेव जी द्वारा टेलीफोन के माध्यम से श्रद्धांजलि संदेश सभी को सुनाया गया। इस सभा का संचालन दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रमोद मेधार्थी ने किया। श्री ईश कुमार जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 4 फरवरी, 2018 (रविवार) को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज जवाहर नगर पलवल, हरियाणा में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई, श्री नरदेव जी, बेनीवाल आदि विद्वान् भाग लेंगे।

इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ का अनुष्ठान किया जायेगा। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य का वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन किया जायेगा। इस अवसर पर आर्यनेता डॉ. अनिल आर्य जी भी उपस्थित होंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो. जय प्रकाश जी आर्य करेंगे।

– संयोजक – स्वामी श्रद्धानन्द, राष्ट्रीय उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

आर्य समाज शालीमार बाग, नई दिल्ली की पूर्व प्रधाना एवं मजबूत स्तम्भ

डॉ. सुमन गुप्ता जी का देहावसान

स्व. डॉ. सुमन गुप्ता

आर्य समाज शालीमार बाग (पूर्वी) नई दिल्ली की पूर्व प्रधाना डॉ. सुमन गुप्ता जी का गत दिनों लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पंजाबी बाग स्थित श्मशान भूमि में पूर्ण वैदिक रीति से की गई। अन्त्येष्टि संस्कार एवं श्रद्धांजलि सभा आदि समस्त आवश्यक क्रियाओं को सम्पन्न करने में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. महेश जी का इस परिवार से अत्यन्त पुराना सम्पर्क एवं सम्बन्ध चला आ रहा है। स्वर्गीया डॉ. सुमन की अस्थि चयन के उपरान्त उनके निवास पर आयोजित शुद्धि यज्ञ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मिलित होकर जहाँ उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं पारिवारिकजनों को सांत्वना देकर ढांढस भी बंधाया। डॉ. सुमन गुप्ता दीनानगर के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व श्री अरविन्द मेहता की बहन थीं। इस अवसर पर श्री अरविन्द मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुरभाषिणी भी उपस्थित थीं। मेहता परिवार से स्वामी आर्यवेश जी का गहरा आत्मीय सम्बन्ध है। अतः स्वामी जी ने उन्हें भी अपनी ओर से सांत्वना प्रदान की। डॉ. सुमन गुप्ता एक सम्भ्रान्त आर्य परिवार की सुपुत्री थीं और उनके पति स्व. डॉ. सुभाष गुप्ता भी एक प्रतिष्ठित समाजसेवक थे। इसी तरह डॉ. सुमन गुप्ता भी आर्य समाज के कार्यों में बढ़–चढ़ कर योगदान करती थीं। उनके सुपुत्र श्री आदित्य गुप्ता तथा पुत्रवधु श्रीमती सोनाली भी उनके पदचिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज की गतिविधियों में विशेष सहयोग करते हैं। उनकी दोनों बेटियाँ तथा दामाद भी उनका अनुसरण करते हुए धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। ऐसी विदुषी माता जी के देहावसान से आर्य समाज शालीमार बाग का मजबूत स्तम्भ गिर गया है। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शांति प्राप्त हो।

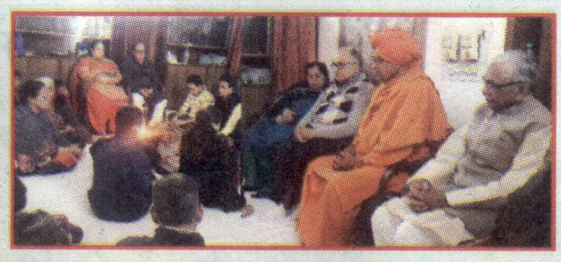

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 12–13 जनवरी, 2018
प्रकाशन की तिथि : 11 जनवरी, 2018
वैदिक सार्वदेशिक
11 से 17 जनवरी, 2018
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वैदिक विरक्त मण्डल सम्मेलन में सम्मान के मनोहारी दृश्य

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।